CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

[Conference Special-NTMAE-24]

प्रेमचंद के साहित्य में नारी जीवन की समस्याओं का यथार्थवादी चित्रण

निर्मला परेवा
शोधार्थी
महाराजा विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान
Email: naaritumho@gmail.com, Mobile-9694400194

First draft received: 14.05.2024, Reviewed: 19.05.2024, Final proof received: 18.06.2024, Accepted: 25.06.2024

सारांश

मुंशी प्रेमचंद का नाम हिंदी साहित्य में भारतीय समाज का यथार्थ चित्रण करने वाले जनवादी लेखक के रूप में जाना जाता है। वे प्रगतिशील लेखक के रूप में अपना साहित्य रचकर हिंदी एवं उर्दू भाषा के प्रतिष्ठित लेखक माने गए है। प्रेमचंद का साहित्य के क्षेत्र में प्रदार्पण सन 1901 ई. में हो गया था जो निरंतर चलने हुए 1936 में उनके देहांत के साथ ही रूका। मुंशी प्रेमचंद का जन्म पराधीन भारत के समाज में ही हुआ यह वह समय था जब समाज मध्यम एवं निम्नवर्ग को अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए बाध्य किया जा रहा था। एक ओर ब्रिटिश सत्ता के अत्याचार तो दूसरी ओर सामंतवादी एवं जमींदारी प्रथा का दंश। भारतीय समाज में यह वर्ग तो शोषण और अत्याचार का शिकार हो ही रहा था साथ ही यह वह समय भी रहा जो समाज के प्रत्येक वर्ग की स्त्रि दासी की तरह जीवन जीने को मजबूर थी। इस किवदन्ती को सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने अपने शब्दों में व्यक्त करते हुए कहा कि 'हमारे समाज में स्त्रियाँ दासो की दासियां थी। इस समय भारत की स्त्रियाँ उपनिवेशवाद एवं सामंतवाद रूपी दो पाटों के बीच पिस रही थी। स्त्रियों को समाज में पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त नहीं थे और यही वजह थी की प्रेमचंद स्त्रियों का तत्कालीन स्थिति से पूर्ण रूप से संतुष्ट नहीं थे। जहां उच्च वर्ग की महिलाएँ सिर्फ घरेलू कार्यों में ही संलग्न रहती थी लेकिन मध्य वर्ग निम्न वर्ग की महिलाएँ घरेलू कार्य के साथ - साथ काश्तकारी का कार्य भी करती थी इसी कारण इस वर्ग के परिवारों में स्त्री शिक्षा को महत्व कम दिया जाता था या दिया ही नही गया। ऐसे समय में मुंशी प्रेमचंद ने नारी जीवन की समस्या को ही अपने साहित्य का मुख्य विषय बनाया और उनके नारकीय जीवन का चित्रण अपने उपन्यास और कहानियों के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत करने में सफल हुए जो प्रेमचंद जी का हिन्दी साहित्य में अविश्वनीय योगदान कहा जाता है। इसलिए प्रेमचंद ने अपने शब्दों में कहा कि - नारी की उन्नति के बिना समाज का विकास संभव नही है, उसे समाजके द्वारा पूर्ण सम्मान दिया जाना चाहिए तभी समाज का विकास भी पूर्ण रूप से हो सकेगा।

मुख्य शब्द : *समाज, नारी, यथार्थवाद, साहित्य, समस्या आदि.*

प्रस्तावना

"समाज सामाजिक संबंधों का जाल है" इस कथन का तात्पर्य है कि समाज का निर्माण व्यक्तियों से नहीं होता बल्कि व्यक्तियों के मध्य पाये जाने वाले सम्बन्धसेहोता है, औरजब एक व्यवस्था में बंध जाते है, तब इसी व्यवस्था को समाज कहते है। इसलिए स्त्री-पुरुष दोनों ही समाज का पूर्ण संतुलन इन दोनों के पारस्पारिक व्यवहार के द्वारा ही स्थापित किया जा सकता है। इनका आपसी सहयोग ही समाज को विकास की ओर आगे बढाने के लिए किया जाता है। और जब इन संबंधों में तनाव व संघर्ष उत्पन्न होता है तो समाज में भी अनेक समस्याएं जन्म लेने लगती है। प्रेमचंद युगीन भारतीय समाज में स्त्री-पुरुषों के संबंधों के मध्य तनाव की स्थिति अधिक दिखाई देती है जिसका मुख्यतः कारण समाज का पुरातनवादी परम्परावादी, रूढिवादी होना रहा है। आदर्श को स्थापित करने के लिए समाज ने नारी पर ही विभिन्न नियम और अनुज्ञाएं स्थापित की और यही सब समय के साथ-साथ नारी के लिए सामाजिक बेड़ियाँ बनती चली गई। इन बेडियों में जकडी नारी का समाज में अपना अलग से कोई भी अस्तित्व नहीं रह सका। नारी के बेडियों में जकडे अस्तित्व को मुंशी प्रेमचंद ने महसूस किया और अपने साहित्य के माध्यम से उसे चित्रित करने का प्रयत्न किया। क्योंकि "साहित्य समाज का वास्तविक आइना होता है।"

प्रेमचंद के साहित्य में भारतीय समाज का सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, पहलुओं का जितना सटीक और वास्तविक चित्रण इन्होने किया है उतना किसी ओर ने ना किया है। प्रेमचंद के साहित्य में भारत की शोषित जनता के साथ - साथ अंधकार में छिपी हुई नारी की समस्याओं को भी लिखते है। जहाँ साहित्य जगत की बात की जाती हे। वहाँ हम देखते है कि वहाँ नारी की स्थिति उतनी अच्छी नही रही । आदिकाल के साहित्य में रासों साहित्य सिर्फ राजाओं की वीरता एवं शौर्य गाथा के रूप में रचा गया। वहां युद्ध के केन्द्र में मुख्यतः नारी की सुन्दरता को रखा गया। भक्तिकाल में भी नारी का श्रृंगारिक वर्णन ही देखने को मिला। नारी को भक्ति

मार्ग की बाधा मानकर अवहेलना की गई तो रीतिकाल में नारी सिर्फ भोग की वस्तु बनकर साहित्य में उभरी जहां उसके कमसिन एवं शारीरिक सौष्ठव को ही अधिक रचा गया। आधुनिक काल में नारी का श्रृंगारिक चित्रण के साथ-साथ कुछ लेखकों ने प्रेरणा की प्रतिमूर्ति की कल्पना करने का साहस दिखाया लेकिन यह स्थिति काल्पनिक अधिक रही वास्तविकता से कोसों दूर तक भी इसका नाता नहीं रहा। प्रेमचंद पूर्व के कथाकारों ने नारी का यथार्यवादी चित्रण करने का प्रयास तो किया लेकिन वे अनुशासित एवं पूर्ण रूपसे चित्रण करने में असफल रहे। प्रेमचंद ने ही नारी का यथार्थवादी चित्रण करने में सफलता प्राप्त की ।

उन्होंने स्त्री गुणों के आधार पर उसे पुरुषों से अधिक श्रेष्ठ माना। उनके दृष्टिकोण से नारी त्याग संयम, वात्सल्य, करूणा की मूर्ति है , नारी जीवन की वास्तविक बुनियाद प्रेम ही है और यही उसके स्वभाव की मूल प्रकृति भी मानी जाती है। इसी गुण के कारण प्रेमचंद जी नारी का अत्यधिक सम्मान करते थे। प्रेमचंद के साहित्य में शहरी, ग्रामीण परिवेश, किसान मजदूर वर्ग से लेकर अभिजात्य वर्ग की नारियों का चित्रण देखने को मिलता है। प्रेमचंद के उपन्यास स्त्री-पुरुष के बीच के सामंजस्य और तालमेल को दिखलाते है। जिससे सामाजिक व्यवस्था पुष्ट और स्थायी स्वरूप में दिखाई देती है। प्रेमचंद ने समाज को स्थायित्व प्रदान करने वाली नारी के जीवन की समस्याओं को अधिक गहराई से रचा है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से नारी जीवन की समस्याओं को चित्रित है। जिनमें दहेज प्रथा, बाल विवाह, बेमेल विवाह, पर्दा प्रथा, वेश्यावृति, अन्तर्जातीय विवाह आदि को समाज मे देखा और प्रेमचंद ने प्रत्येक समस्या को आधार बनाकर ही अपना साहित्य रचा। अपने साहित्य के द्वारा सामाजिक जीवन का चित्रण वे निर्मला उपन्यास से लिखना प्रारंभ करते है।

संसार में नारी का जन्म बालिका के रूप में होता है । लेकिन भारतीय संस्कृति में इसे ही कन्या जन्म के रूप में देवी माना गया जो हमारी पुरातन संस्कृति की देन है, परन्तु कालान्तर में नारी के प्रति बदलते दृष्टिकोण ने उसे समाज में अभिशाप के रूप में मान्यता दी जाने लगी। प्रेमचंद का साहित्य इस सत्य को पूर्ण रूप से उद्घाटित करता है और स्पष्ट करता है कि भारतीय पुरुष नारी से इसी कारण क्रोध में रहता है क्योंकि उसके गर्भ से बार-बार कन्या का ही जन्म होता है। प्रेमचंद की कहानी 'नैराश्य' की निरूपमा ऐसी अभागी नारी है जो बार-बार कन्या को ही जन्म देती । कुलीन कुल की वधू होने पर भी उसे पति से उपेक्षा सिर्फ कन्या जन्म के कारण ही मिलती है। कहानी की शुरुआत होती है- आज आदमी अपनी स्त्री से इसलिये नाराज रहते है कि उसके लडकियां क्यों होती है, लडके क्यों नहीं होते सीधे मुंह बात नही करते, कई दिनों तक घर में नही आते और आते भी तो इस तरह खिंचते रहते है कि निरूपमा थर-थर काँपती रहती थी कही गरज उठें सबसे बडी विपत्ति यह थी कि त्रिपाठी जी ने धमकी दी थी अबकी कन्या हुई तो मैं घर छोडकर निकल जाउंगा इस नरक में छण भर भी न ठहरूँगा। निरूपमा को चिन्ता खाए जाती थी। निरूपमा घोर निराशा की दशा में अपनी भाभी को पत्र भेजती है। उसकी भाभी स्वांग रचकर उसे महात्मा के दर्शनार्थबुला लेती है और बोलती है कि महात्मा का आशीर्वाद निष्फल नहीं किया जा सकता। अब वह पुत्रवती होगी।''..... ''जब वह गर्भवती हुई तो सबके दिलों में आशाएँ हिलोरे लेने लगी। सास जो उठते गाली और बैठते व्यंग्य से बात करती थी अब उसे पान की तरह फेरती.....बेटी तुम रहने दो मै ही रसोई बना लूँगी, तुम्हारा सिर दुःखने लगेगा।....लडकियों की बात और होती है उन पर किसी बात का असर नहीं होता, लडके गर्भ में ही मान करने लगते है.....घमण्डी लाल वस्त्राभूषणों पर उतारू हो गए। हर महीने एक न एक नई चीजे लाते। निरूपमा का जीवन इतना सुखमय कभी न था। उस समय भी नहीं जब वह नेवली वधू थी।''

परन्तु पुनः कन्या का जन्म होने पर उसका जीवन चिन्ताग्रस्त हो जाता है। फिर वही अपमान, वही अनादर, वही ताने. अन्त में इसी शोक में वह पुत्री को जन्मते ही मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। यह हमारे समाज में नारी जीवन की प्रारंभिक दशा का स्वरूप है।

प्रेमचंद कालीन समाज में सामाजिक नैतिकता का दोहरा मानदण्ड अपनाया जाता था। जिन कार्यो के लिये पुरूषों की कोई आलोचना नहीं करता, उन्ही कारणों से नारी चरित्रहीन और कुलटा कही जाती थी।

प्रेमचन्द के उपन्यास'प्रेमा','सेवासदन','निर्मला','गबन' के केन्द्र में नारी को रखा गया है। मध्यमवर्गीय भारतीय समाज में कन्या जन्म ही समस्याओं की जड समझा जाने लगा और नारी होना अभिशापित हो गया। कन्या अपने जन्म के साथ अपने पालन-पोषण और विवाह सम्बन्धी समस्याओं को लेकर आती है, जो एक पारिवारिक चिन्ता का कारण बनती गयी। ऐसा हमारे समाज में नारी के प्रति जो दृष्टिकोण रहा है उसके कारण होता रहा है। जैसा हमने नैराश्य कहानी की पंक्तियों में देखा.....लडकियों की बात और होती है, उन पर किसी बात का असर नहीं होता, लडके गर्भ में ही मान करने लगते है।

वही निम्नवर्गीय परिवार में धन का अभाव कन्या के पालन पोषण एक समस्या का कारण होता है। ''गोदान'' उपन्यास में होरी की दोनों कन्या रूपा और सोना के माध्यम से धन के अभाव को प्रेमचंद ने वर्णन किया है।

प्रेमचंद ने मध्यम वर्गीय परिवार की कन्या जलपा और सुमन एवं निम्न वर्गीय परिवार की कन्या सोना, रूपा के जीवन के अन्तर को अपने उपन्यासों में व्यक्त किया है। जहाँ गबन एवं सेवासदन की कन्या जलपा एवं सुमन सुखी-सम्पन्न परिवार के सपने एवं आभूषणों की लालसा अपने नेत्रों में बसाती है, वहीं गोदान की कन्या सोना, रूपा के अन्दर आभूषण और भोग विलास की लालसा उत्पन्न भी नहीं होती है। जलपा चन्द्रहार पाने की इच्छा रखती है तो सुमन वैभव पूर्ण जीवन जीने की लालसा रखती है वहीं सोना, रूपा अपने विवाह के लिए पिता को कर्ज में डूबते हुए नहीं देखना चाहती है। प्रेमचंद जी ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से यही स्पष्ट है विवाह पूर्व नारी जिन परिस्थितियों में रहती है उसी के अनुसार उसकी रूचि और जीवन के प्रति दृष्टिकोण भी विकसित होता रहता है और आगे उसका वैवाहिक जीवन इन परिस्थितियों से भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। प्रेमचंद ने कन्या जन्म के साथ-साथ, कन्या के पारिवारिक वैभव से उनकी मनोवृतियों में आने वाले बदलाव को भी अपने साहित्य में चित्रित किया जो अपने आप में अनूठा साहित्यिक योगदान है।

प्रेमचंद ने वैवाहिक जीवन की समस्याओं में दहेज प्रथा, बेमेल विवाह, बाल विवाह आदि कुप्रथाओं को अपने कथा साहित्य और उपन्यासों में चित्रित किया है। दहेज रूपी कुप्रथा का चित्रण उन्होने निर्मला, गोदान, सेवासदन आदि उन्यासों में किया। निर्मला उपन्यास में निर्मला का जीवन दहेज के कारण ही बर्बाद होते हुए दिखाया गया है। पिता उदयभानु लाल की मृत्यु के कारण निर्मला का विवाह संबंध टूट जाता है। इसी कारण अपने से 20 वर्ष बडे तोताराम से निर्मला का बेमेल विवाह करा दिया जाता है जो उसके जीवन में अनेक समस्याओं का कारण बनता है। उसे तोताराम के संदेह का दंश भी

झेलना पडता है तो विमाता होने का कलंक भी अपने सिंर लेना पडता है। निर्मला परिवार की अनेक समस्याओं से जूझती हुइ अन्ततः अपने प्राण त्याग देती है। अपने जीवन की इसी त्रासदी को निर्मला अन्त में रूकमणि से व्यक्त करती हुई कहती है-दीदीजी, बच्ची को आपकी गोद में छोड जाती हूँ। अगर जीती-जागती रहे तो किसी अच्छे कुल में विवाह कर दीजिएगा। मैं तो इसके लिए अपने जीवन में कुछ न कर सकी। केवल जन्म देने भर की अपराधिनी हूँ। चाहे कुआंरी रखिएगा। चाहे विष देकर मार डालिएगा पर कुपात्र के गले न मढिएगा, इतनी ही आपसे विनती है।'' वही सेवासदन और गोदान में भी माता-पिता की इस चिन्ता को प्रेमचंद ने व्यक्त किया है।

भारतीय समाज में दहेज प्रथा प्रेमचंद के समय की सबसे प्रमुख समस्या बनकर उभरी जिसके परिणाम स्वरूप समाज में अन्य समस्याएं पनपी। समाज में बाल विवाह, अनमेल विवाह आदि परम्परावादी रूढियां विकसित होती चली गयी। भारतीय समाज में जितनी भी समस्याएं उत्पन्न हुई, उनके मूल में दहेज प्रथा ही मुख्य कारण रहा। समाज का अधिकांश वर्ग अपने दैनिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद इतना बचा ही नहीं पाता कि वो दहेज के लिए अलग से बचा सके और इस कुप्रथा की सर्वाधिक मार मध्य एवं निम्न वर्गीय परिवार की महिलाओं ने सही है।

वर्तमान में भी यह प्रथा दिन-प्रतिदिन बढती ही जा रही है। शिक्षित परिवारों में यह कुप्रथा का प्रचलन आज भी देखा जा रहा है।

प्रेमचंद ने शिक्षित परिवारों में इस प्रथा को टूटने का भ्रम सेवासदन में चित्रित किया है। कृष्णचंद्र जब सुमन के विवाह के लिए वर खोजते है तो ''उन्हे देखकर आश्चर्य हुआ कि वरों का मोल उनकी शिक्षा के अनुसार है, राशि वर्ण ठीक हो जाने पर जब लेन-देन की बाते होने लगती है तब कृष्ण चंद्र की आँखों के सामने अंधेरा छा जाता था। ऐसी स्थिति में दरोगा कृष्ण चंद्र के सामने दो ही उपाय बचते है या तो पुत्री का विवाह किसी कुपात्र से कर दे या रिश्वत लेकर दहेज की रकम जुटाये। कृष्ण चंद्र ने दूसरे उपाय का ही आश्रय लिया।

प्रेमचंद ने निर्मला उपन्यास और कुसुम कहानी में स्पष्ट कर दिया कि दहेज जैसी कुप्रथा के लिए वर के माता-पिता जितने उत्तरदायी है उतने ही इसके लिए युवक वर्ग भी दोषी है। ऐसे दहेज के लोभी नवयुवकों के कारण कितनी ही लडकियों का जीवन बर्बाद हो गया है।

बाल विवाह की दारूण दशा का वर्णन प्रेमचंद जी ने ''नैराश्य लीला तथा सुभागी'' कहानी में किया है। बाल विवाह के दुष्परिणाम से माता-पिता को दुखी दिखाया ही है साथ ही बाल विधवाओं के प्रति लोगों के अनुदार को भी दिखलाया है। लोग अपनी संकीर्ण विचारधारा के कारण बाल-विधवाओं को आज्ञा आदेश देते है कि ''बेटी संसार में रह कर तो संसार की सी करनी ही पडेगी''। बिना मांझी के नांव पार लगाना कठिन है, जिधर हवा पाती है बह जाती है, कह कर लेखक विधवा पुनर्विवाह की ओर भी संकेत करते दिखते है। प्रेमचंद जी बाल-विवाह को बुरा मानते है लेकिन इस गलती में अगर लडकी विधवा हो गयी हो तो पुनर्विवाह करने उसमें सुधार के संकेत भी समाज को अपने साहित्य के माध्यम से देते दिखाई देते है।

प्रेमचंद जी वैवाहिक समस्याओं को अपने साहित्य में दिखलाकर व्यक्त कर दिया कि इन समस्याओं के मूल में तत्कालीन समाज की दूषित सामाजिक व्यवस्था रूढिवादी परम्पराएं, अंधविश्वास आदि को माना गया है। जिसके परिणाम स्वरूप कितनी ही नारियों ने अपने जीवन का सर्वनाश करके चुकाया है।

निष्कर्ष

भारतीय समाज में नारी का जीवन प्रारम्भ से अंत तक अनेक समस्याओं से आच्छादित रहा है। कन्या, पत्नी, वधू, बहन, विधवा आदि रूपों में समाज ने उसके सामने समस्याओं को ही रखा है। प्रेमचंद ने नारी जीवन की जटिलता को देखा और परखा है। अपने साहित्य के माध्यम से समाधान का प्रयास भी किया है। उनका मानना रहा कि सहयोग और सद्भाव की भावना से ही स्त्री-पुरूष इन समस्याओं को समाज में पनपने और बढने से रोक सकते है।

सहायक ग्रन्थ सूची

1. प्रेमचन्दः सेवासदन प्रथम, सरस्वती सीरीज,

- कायाकल्प संस्करण, 1986 ई
- निर्मला संस्करण, 1986 ई
- प्रतिज्ञा संस्करण, 1986 ई
- गबन संस्करण, 1986 ई
- गोदान संस्करण, 1986 ई

2. प्रेमचन्द्रः मानसरोवर, आठ भाग आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली

3. समाज शास्त्र एस पी गुप्ता आगरा बुक स्टोर, आगरा

4. प्रेमचन्दः डॉ प्रताप नारायण टण्डन जगदीश भारद्वाज सामयिक प्रकाशन

5. प्रेमचन्द और उनका युग - डॉ रामविलास शर्मा - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

6. प्रेमचंद का नारीवाद, लेख, प्रियंका कुमारी, गांव कनेक्शन, वेबसाइट

7. सहचर - त्रैमासिक ई-पत्रिका

8. निबंध, कीर्ति भारद्वाज, साहित्य कुंज